क्या तन्त्र-मन्त्र एवं साधनाएं अंधविश्वास है?

भारतवर्ष की सनातन विद्याओं में मंत्र-तंत्र एवं धार्मिक साधनाओं को परिगणित किया जाता है। इन सब में विशिष्ट कर्मकाण्ड का भी आयोजन होता रहता है। वैज्ञानिक सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य की तार्किक बुद्धि का ऐसा उत्कर्ष विकास हुआ है, कि आज मनुष्य प्रत्येक वस्तु को संदेह की दृष्टि से देखने लगा है। संदेह के ऐसे ही वातावरण में आज लोगों का एक वर्ग मंत्र-तंत्र, साधनाओं को ही नहीं, योग विद्या, समाधि, रत्न विज्ञान, ज्योतिष सभी को अन्धश्रद्धा या अन्धविश्वास की संज्ञा देता है और चुनौती देता है कि दम है तो कोई चमत्कार प्रदर्शित करो।

भौतिक रुप में जिसे चमत्कार कहा जाता है, वह वास्तव में बाजीगरी है और एक योगी से, आध्यात्मिक साधक से कोई उस तरह के चमत्कार की कैसे आशा कर सकता है। फिर भी यौगिक शक्तियों के चमत्कार घटित होते देखे गए हैं। गंध साधक योगी के शरीर से ऐसी गंध फूटती है कि पूरा वातावरण महक उठता है।

बनारस के स्वामी विशुद्धानन्द के सम्बन्ध में कहा जाता है, कि वे कुण्डलिनी साधक और अपनी नाभि से योग साधना की अवस्था में एक कमल पुष्प प्रकट कर देते थे। उस कमल पुष्प के आसन पर ब्रह्माजी की छवि भी दिखलाई देती थी।

योगी मायानन्द के बारे में कहा जाता है, कि वे अपने शरीर में विभिन्न मणियों को धारण करते थे और इच्छानुसार अपने शरीर के भीतर से उन मणियों को प्रदर्शित भी कर सकते थे।

इसमें सन्देह नहीं सिद्ध योगी चमत्कारों का प्रदर्शन कर सकता है। योग साधनाओं को अन्धविश्वास कहना अल्प बुद्धित्व का प्रमाण है। अन्धविश्वासों को प्रायः 'टोटमवाद' की देन माना जाता है। 'टोटमवाद' अर्थात् आदिम सभ्यता के युग के विश्वास, जबकि मनुष्य भूत-प्रेतों के अस्तित्व पर विश्वास करता था, वृक्षों, नदियों, पहाड़ों की पूजा करता था, जादू-टोने की क्रियाएं सम्पन्न करता था। हमारे वैदिक साहित्य में इस तरह के शत् सहस्त्रों उदाहरण मिलेंगे, जिनमें मित्रों को लाभ पहुंचाने तथा शत्रुओं को नुकसान पहुंचाने की दृष्टि से कर्मकाण्ड प्रतिपादित किए जाते थे।

पूरा का पूरा 'अथर्ववेद' इस प्रकार के कर्मकाण्डों से पूर्ण हैं। आश्चर्य तो यह है, कि हजारों साल पूर्व भी वे प्रयोग अपने फलितार्थ को प्रकट करते थे और आज के वैज्ञानिक युग में भी वे प्रयोग सत्य घटित होते हैं। यदि वे सारे प्रयोग अन्धविश्वास मात्र हैं, तो उनके फलितार्थ सत्य क्यों होते हैं? वास्तविकता यह है कि तांत्रिक साधनाओं में अथवा यांत्रिक प्रयोगों में आस्था की गहन भूमि होती है। मंत्र-विज्ञान की यह आधारभूत शर्त होती है कि यदि संदेह के साथ मंत्र जप किया जाएगा, तो उसमें कदापि सफलता नहीं मिलेगी। इसी प्रकार यदि तांत्रिक प्रयोगों के प्रति हम तर्क-कुतर्क करते हैं, तो उसमें भी सफल नहीं हो सकते। साधनाओं का स्वरुप ही ऐसा होता है कि उसमें शंकाओं की कोई गुंजाइश नहीं होती। तंत्र-मंत्र सम्बन्धी साधनओं में वस्तुतः मनुष्य की आस्था ही फलीभूत होती है। यदि आस्था की जड़े गहरी नहीं है, तो तांत्रिक-मांत्रिक प्रयोगों में सफल होने का प्रश्न ही नहीं उठता। नास्तिक व्यक्ति को ईश्वर के अस्तित्व का बोध ही नहीं हो सकता। इसी प्रकार अनास्थावादी व्यक्तियों को साधनाओं में सफलता नहीं मिलती, जो लोग भूत-प्रेतों को नहीं मानते, उन्हें मिथ्या विश्वास की संज्ञा देते हैं, उनके सामने भूत-प्रेतों का कभी प्राकट्य होगा ही नहीं।

भारतवर्ष में साधनाओं का स्वरुप तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। प्रथम योग-पथ कहलाता है। योगी के अनुभव सूक्ष्म होते हैं। यदि वह ईश्वर का साक्षात्कार करना चाहता है, तो वह साक्षात्कार सूक्ष्म रुप में होगा भौतिक रुप में नहीं। द्वितीय-ज्ञान पथ कहलाता है। यह निर्गुण साधना है। इसमें साधक ब्रह्माण्ड की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा की सत्ता का अनुभव करता है। अपनी आत्मा के भीतर ही मनुष्य इसमें सब कुछ देखता है। तृतीय-भक्ति-पथ माना गया है। इसमें साधक को सब कुछ भौतिक रुप में भासित होता है। चूंकि यह

रहस्यवाद का क्षेत्र है, अतः वैज्ञानिक उपकरणों से इन सब अनुभवों का परीक्षण नहीं किया जा सकता। इन सबको अन्धश्रद्धा या अन्धविश्वास कहना बौद्धिक विभ्रम के अतिरिक्त कुछ नहीं है।

तथा कथित बुद्धि-जीवियों और तंत्र-मंत्र के संबंध में कुतर्क करने वाले लोगों को चुनौती देने वाली एक घटना (फरवरी 1997) बिहार में घटित हुई। प्राप्त समाचारों के अनुसार बिहार के मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद यादव को दैवी शक्ति प्रवाहित लगभग एक लाख रुपयों की एक चांदी की तलवार एक भव्य समारोह में भेंट की गई। मोतियों व चांदी से जड़ी इस तलवार को दरभंगा के विभिन्न मंदिरों में ले जाया गया और उसमें देवी शक्ति प्रवाहित होने पर, धारण करने वाले की सभी आफतों से रक्षा होगी तथा उसके शत्रुओं का संहार होगा। उक्त चांदी की तलवार को अजमेर शरीफ में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की मजार पर भी धार्मिक रस्मोरिवाज के साथ ले जाया गया था तथा शक्ति-प्रवाह की क्रिया की गई थी। श्री लालू प्रसाद यादव को हजरत निजामुद्दीन की एक चादर और माला भी भेंट में दी गई।

आस्था और श्रद्धा के विषय को अन्धविश्वास मानने वाले लोग इस घटना की कैसी व्याख्या करेंगे? यदि यह अंधविश्वास है तो उक्त समारोह के आयोजकों की सार्वजनिक निंदा की जानी चाहिए। किन्तु यदि यह श्रद्धा या आस्था का विषय है तो इसे एक प्रमाण माना जाना चाहिए, कि विपत्ति के क्षणों में मनुष्य साधनाएं सम्पन्न कर अपनी रक्षा कर सकता है। तंत्र-मंत्र एवं साधनाएँ अन्धश्रद्धा नहीं है, अपितु उनके पीछे शास्त्रोक्त और लोक निष्ठा मान्यताएँ होती हैं। जिनके कारण उनसे सम्बन्धित क्रियाएं इच्छित फलितार्थ को प्रकट करती हैं। विज्ञान की कसौटी पर इन्हें कसना नितान्त असंगत है।

संकलित

♦♦♦

यदि आप अपनी जिन्दगी में व्यस्त है और गुरूदेव से अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मिलना चाहते हैं, परन्तु समय नहीं निकाल पा रहे हैं तो निश्चिंत रहें, अब गुरूदेव से फोन के माध्यम से बात करें उपरोक्त जानकारी के लिए जोधपुर कार्यालय से सम्पर्क करें।

मुख्यालय फोन नं.– 0291–2618625, 2621625 एवं 2440011, 2440111

गृह–क्लेश निवारण कवच

प्रायः हर व्यक्ति आज तनावग्रस्त है, संयुक्त परिवार में जहाँ सास-बहू, ननद-भाभी के झगड़ों को गृह-क्लेश का कारण बनाकर लोगो में आये दिन पति-पत्नी में अनबन, तो बच्चों में तकरार, गृह-क्लेश तो पीछा ही नहीं छोड़ रहा, यदि आप की तमन्ना है,कि घर मे खुशियाँ हो अपार, सुख-शांति का हो वास तो क्यों हैं उदास हैं आपके पास.....

न्यौछावर राशि 2100/– रु.

कालसर्प योग

एक महाविनाशकारी पीड़ादायक योग

कालसर्प योग एक भयानक पीड़ादायक योग है जो व्यक्ति के जीवन को अत्यंत दुःखदायी बना देता है। उस व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव बना ही रहता है। चाहे वह व्यक्ति पूर्ण प्रधानमंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू हो अथवा विश्व में बेहद चर्चित बिगबुल हर्षद मेहता। इस योग ने सभी को कष्ट दिया है। कालसर्प योग को लेकर जन सामान्य में अनेक भ्रांतिया हैं। इस योग की शान्ति के लिये आये दिन धूर्त ज्योतिषियों द्वारा कई प्रकार से पैसा ठगने की बात सामने आती है जबकि उस जातक को कालसर्प योग होता ही नहीं है। अतः सावचेत रहें। अगर आप वाकई कालसर्प योग के प्रभाव में हैं तो समय पर कालसर्प योग की शान्ति के लिये इन प्रामाणिक उपायों का सहारा लें।

कालसर्प दोष शान्ति हेतु विशेष सामग्री–1.सम्पूर्ण कालसर्प यंत्र 2.कालसर्प यंत्र 3.कालसर्प यंत्र पैंडल 4.कालसर्प यंत्र मुद्रिका 5.कालसर्प यंत्र पिरामिड (यंत्र, पैंडल व मुद्रिका स्वर्ण, चांदी, ताम्र में उपलब्ध)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

सामग्री प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org